संगारेड्डी की आँगनवाड़ियों में पोर्टफ़ोलियो का उपयोग

दसन्ना मरेड्डी और सुजाता रावी

फ़ाउंडेशनल स्टेज पर बच्चे के आकलन की दो मुख्य विधियाँ हैं – बच्चे का अवलोकन और उसके सीखने के दौरान बनी रचनाओं/कृतियों (artefacts) का विश्लेषण। इन कृतियों को बच्चे अपने सीखने के अनुभव के हिस्से के रूप में तैयार करते हैं।

शुरुआती कक्षाओं (early childhood classroom) के सन्दर्भ में कृतियों या आर्टिफेक्ट का तात्पर्य सीखने की प्रक्रिया के दौरान तैयार की गई वस्तुओं/रचनाओं से है। बच्चों द्वारा बनाए गए आर्टिफेक्टों को देखकर हम समझ सकते हैं कि बच्चों ने कोई अवधारणा कितनी भली-भाँति सीखी है और बच्चों के समझने का स्तर उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं को कैसे प्रभावित करता है। आर्टिफेक्ट बच्चे की क्षमताओं व सामर्थ्यों की समृद्ध जानकारी प्रदान करते हैं।

एक पोर्टफ़ोलियो बच्चों के महत्त्वपूर्ण काम के नमूनों और रिकॉर्ड का संग्रह होता है जो कि सीखने के तय उद्देश्यों का आकलन करने में बच्चों के प्रयास व उपलब्धियों के प्रमाण होते हैं। शिक्षक को तय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का विश्लेषण करके उनकी प्रगति का आकलन करना चाहिए। एक बच्चे के पोर्टफ़ोलियो को इस तरह आयोजित किया जाना चाहिए जिसमें प्रतिफलों को प्राप्त करने के स्पष्ट मापदण्ड हों। प्रत्येक बच्चे के पास अपने प्रासंगिक आर्टिफेक्ट्स को रखने के लिए एक विशेष फोल्डर होना चाहिए।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। खण्ड 6.2 प्रक्रिया तथा आकलन के उपकरण। पेज 173, एवं 177-78.

संगारेड्डी आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में, शिक्षक बच्चों के पोर्टफ़ोलियो बनाते हैं जिनमें उन बच्चों की सम्पूर्ण जानकारी जैसे - उनका काम, प्रगति के मापदण्ड, अभिभावकों से प्राप्त जानकारी तथा शिक्षकों के अवलोकन से जुड़ी बातें शामिल होती हैं।

हर साल की शुरुआत में शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए एक बैग/फोल्डर तैयार करते हैं। इन बैगों में बच्चों से जुड़ी जानकारी ऊपर लिखी जाती है ताकि आसानी से उनकी पहचान की जा सके। इनके अन्दर बच्चों की चित्रकलाएँ, क्राफ्ट की गई वस्तुएँ, शिक्षक का अवलोकन, संक्षिप्त व्याख्या व वर्कबुक सिलसिलेवार ढंग से रखी जाती हैं। हर तिमाही के अन्त में, प्रत्येक बच्चे के पोर्टफ़ोलियो के आधार पर शिक्षक उनका आकलन कार्ड भरकर बच्चों के पोर्टफ़ोलियो में रखते है। यह आकलन कार्ड महिला एवं बाल विकास विभाग (DWCD) द्वारा मुहैया कराया जाता है।

इस लेख में हम दो ऐसी केस स्टडीज़ प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें शिक्षकों द्वारा पोर्टफ़ोलियो की मदद से बच्चों के विकास को आँका जा रहा है तथा उन्हें नए अवसर दिए जा रहे हैं। और साथ ही, कैसे इन पोर्टफ़ोलियो की मदद से अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रगति समझायी जा रही है।

केस स्टडी-1 : पोर्टफ़ोलियो बनाना व व्यवस्थित रखना

मल्लेश्वरी, आँगनवाड़ी शिक्षिका, नागसनपल्ली, सदाशिवपेट योजना, ज़िला संगारेड्डी, तेलंगाना

मल्लेश्वरी ने 2002 में संगारेड्डी ज़िले के सदाशिवपेट ब्लॉक के एक गाँव में आँगनवाड़ी शिक्षिका के रूप में काम करना शुरू किया था। उन्होंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। फिलहाल उनकी आँगनवाड़ी में 3 से 6 वर्ष की आयु के कुल 13 बच्चे आते हैं।

हालाँकि, उन्होंने बच्चों के पोर्टफ़ोलियो व्यवस्थित करना 2015 से ही शुरू किया है। शुरुआत में, उन्होंने पोर्टफ़ोलियो का इस्तेमाल कक्षा में प्रदर्शनी के तौर पर किया। वे छोटे-छोटे झोलों पर बच्चों के नाम व कुछ अन्य ज़रूरी जानकारियाँ (जन्मतिथि, लिंग, अभिभावकों के नाम तथा सम्पर्क आदि) लिखकर कक्षा में रखती थीं। उन झोलों में क्या रखा जाए या बच्चों के काम की जानकारियाँ कैसे उनके विकास के दस्तावेज़ों के तौर पर इस्तेमाल की जाएँ, इसकी समझ उन्होंने क्षमतावर्धन कार्यक्रमों, साथियों व अपने निजी अनुभवों से धीरे-धीरे हासिल की। और धीरे-धीरे उन्होंने बच्चे के विकास के आकलन में पोर्टफ़ोलियो के फ़ायदे एवं उसकी महत्ता की समझ भी विकसित कर ली।

उन्होंने बच्चों की रचनाओं और वर्कबुकों को पोर्टफ़ोलियो में रखना शुरू कर दिया। जब उनकी सुपरवाइज़र ने उनकी आँगनवाड़ी का दौरा किया और उन्हें यह सलाह दी कि वे बच्चों का काम पूरे होते ही उस पर उस दिन की तारीख डाल दिया करें, तो उन्होंने ऐसा करना शुरू कर दिया। इस अभ्यास ने उन्हें पालक मीटिंग के दौरान बच्चों के माता-पिता को बच्चों के कामों की प्रगति समझाने में काफ़ी मदद की। लेकिन उनके लिए अगली चुनौती यह थी कि जब माता-पिता अपने बच्चों के किसी ख़ास काम की जानकारी माँगते थे तो वे उसका पूरा विवरण याद नहीं रख पाती थीं। इसलिए उन्होंने बच्चों के हर काम में तारीख डालने के साथ उसका संक्षिप्त विवरण भी लिखना शुरू कर दिया। अगली मीटिंगों में वे अभिभावकों को बच्चों के काम से जुड़ी जानकारियाँ भी दे पाती थीं। माता-पिता इस प्रक्रिया से बेहद ख़ुश थे क्योंकि वे समय के साथ अपने बच्चों का विकास देख पा रहे थे।

बच्चों के लिए तैयारी करने और जहाँ ज़रूरी है वहाँ और सीखने के अवसर देने में पोर्टफ़ोलियो ने मल्लेश्वरी की काफ़ी मदद की। इससे उन्हें यह भी एहसास हुआ कि पोर्टफ़ोलियो के होने से वे प्रत्येक बच्चे के आकलन कार्ड को और बेहतर व सटीक ढंग से भर पा रही थीं। इससे पहले तक उन्हें लगता था कि बच्चों के विकास को समझने के लिए एकमात्र तरीक़ा अवलोकन ही है।

पोर्टफ़ोलियो की मदद से कक्षा में होने वाली दैनिक गतिविधियों व प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतों पर न केवल ध्यान देने का मौक़ा मिल रहा था बल्कि वे बच्चों का सहयोग भी कर पा रही थीं। एक और ख़ास बात यह कि बच्चों को अपना पोर्टफ़ोलियो देखने का मौक़ा मिलता था। बच्चे उत्साहित होने के साथ-साथ अपने काम के विभिन्न आयामों को बताने के लिए प्रोत्साहित भी होते थे। मल्लेश्वरी बच्चों को अपने अन्य साथियों के कामों को देखने व उन पर बातचीत करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं, जिससे बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित होते हैं और वे अन्य बच्चों के कामों की सराहना कर पाते हैं।

साल के अन्त में, जब बच्चे आँगनवाड़ी से निकलकर सरकारी प्राथमिक शालाओं में दाखिल होते हैं तो मल्लेश्वरी वहाँ के शिक्षकों के साथ बच्चों के पोर्टफ़ोलियो साझा करती हैं। जो बच्चे प्राइवेट स्कूलों में दाखिला लेते हैं, उनके पोर्टफ़ोलियो उनके माता-पिता को दे दिए जाते हैं ताकि उन्हें बच्चों के नए शिक्षकों के साथ साझा किया जा सके। इससे प्राथमिक स्कूल के शिक्षक इन बच्चों के अभी तक के विकास को समझ पाते हैं और पोर्टफ़ोलियो से प्राप्त जानकारी के आधार पर अगले अकादमिक सत्र की तैयारी कर पाते हैं।

चित्र-1 व 2 : *बच्चे के रंग भरने के कौशल में सुधार स्पष्ट है।*

केस स्टडी-2 : आर्टिफेक्टों का विश्लेषण

जे. इन्दिरा, आँगनवाड़ी शिक्षिका, लिंगापुर, नारायणखेड़ प्रोजेक्ट, ज़िला संगारेड्डी, तेलंगाना

साल 2018 से इन्दिरा सक्रिय रूप से पूर्व-प्राथमिक (आँगनवाड़ी) कार्यक्रम चला रहीं हैं और बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें विकासात्मक रूप से जुड़े अवसर प्रदान कर रही हैं। साथ ही, पिछले तीन साल से, बच्चों के विकास की बेहतर समझ बनाने के लिए वे लिखित अवलोकन व पोर्टफ़ोलियो को भी सम्हालकर रख रही हैं।

आँगनवाड़ी शिक्षकों की एक क्षमतावर्धन कार्यशाला के दौरान इन्दिरा बच्चों के पोर्टफ़ोलियो लेकर आईं और अन्य शिक्षिकाओं को समझाया कि कैसे वह इन पोर्टफ़ोलियों का इस्तेमाल करती हैं। उस सत्र में उन्होंने एक बच्चे के (रेखाकृति के भीतर) रंग भरने का उदाहरण लिया और समझाया कि कैसे लगातार अभ्यास ने कुछ महीनों के भीतर उस बच्चे की उँगलियों के क़लम पकड़ने और उसे नियंत्रित करने के कौशल को बेहतर किया था। सितम्बर 2022, में एक गेंद में भरे रंग व अक्टूबर 2023 में एक फूल व पत्तियों में भरे रंग में साफ़ फ़र्क देखा जा सकता है। (देखें **चित्र-1 व 2**)

एक शिक्षक-पालक मीटिंग (आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में ECCE दिवस) में इन्दिरा ने एक पालक को उनके बच्चे का पोर्टफ़ोलियो दिखाया। इस बच्चे के पालक ने अपने बच्चे को आँगनवाड़ी से निकालकर एक प्राइवेट प्री-स्कूल में भेज दिया था। परन्तु जब उन्होंने देखा कि यहाँ इन्दिरा ने उनके बच्चे के काम और विकास को किस तरह सम्हालकर रखा है तो वे इतने खुश और भावुक हो गए कि वे वापस अपने बच्चे को आँगनवाड़ी में भेजने लगे।

निष्कर्ष

बच्चों की प्रगति का रिकॉर्ड रखने में पोर्टफ़ोलियो की महत्ता को संगारेड्डी की कई आँगनवाड़ी शिक्षिका बहुत अच्छे से समझती हैं। ये शिक्षिकाएँ बच्चों की विकासात्मक प्रगति को समझने के लिए पोर्टफ़ोलियो को प्रभावी ढंग से बनाए रखती हैं और उनका इस्तेमाल करती हैं।

इस नए अभ्यास से अभिभावकों व समुदाय के लोगों में आँगनवाड़ी को लेकर जो उनकी सोच थी वह बदली है। आँगनवाड़ी सिर्फ़ खाना बाँटने की जगह से बदलकर सीखने की जगह बन गई है। इसी के फलस्वरूप, माता-पिता अब अपने बच्चों को और अधिक नियमितता से आँगनवाड़ी भेजते हैं तथा घर में उनके साथ खेलते, कहानियाँ सुनाते और अन्य गतिविधियाँ करते हुए समय बिताते हैं। समुदाय भी अलग-अलग तरह से आँगनवाड़ी को सहयोग करता है जैसे- खेलने-पढ़ाने के लिए लगने वाली वस्तुएँ देना, बिना पैसों के जगह मुहैया कराना, सफ़ाई में मदद, बच्चों के इस्तेमाल के लिए आँगनवाड़ी के आस-पास की जगह को समतल करना इत्यादि।

दसन्ना मरेड्डी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले के नारायणखेड़ ब्लाक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के फील्ड कार्य का समन्वय करते हैं। वे अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ECE) से जुड़े विभिन्न हितधारकों व छोटे बच्चों के साथ सीखने के अनुभवों पर काम करना पसन्द करते हैं। इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट दसन्ना पिछले 10 साल से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं, इसके पहले 2 साल वे 'इनफ़ोसिस' के साथ काम कर चुके हैं। उनसे *Dasanna.mareddy@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सुजाता रावी तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले में बतौर ब्लॉक समन्वयक काम कर रहीं हैं। वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्धन और बच्चों के आकलन के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने वाली टीम की सदस्य हैं। वे अन्य राज्यों, जहाँ फाउण्डेशन काम कर रहा है, में ECE विस्तार की टीम में भी शामिल हैं। उनसे *raavi.sujatha@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : शिवम **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अफसाना पठान